Nature of development psychology

यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो व्यक्ति के जीवन में विभिन्न योग्यताओं तथा क्षमताओं व्यवहारों और क्रियाओं के विकास का अध्ययन विकासात्मक approach (उपागम) द्वारा करती है। प्राणी के जीवन का प्रारंभ उसके जन्म से नहीं बल्कि जन्म के पूर्व (गर्भाधान) के समय ही हो जाता है। अपने इसी विशिष्ट approach के कारण यह मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं से अलग है। इसका यह दृष्टिकोण इसकी एक अनुपम विशेषता है।

विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो हर प्राणी में पाई जाती है। विकास का शुभारंभ जन्म के पूर्व गर्भाधान के दो सप्ताह बाद हो जाता है और मृत्यु के पूर्व तक जारी रहता है। "व्यक्ति के जीवन काल में क्रमिक रूप से घटित होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों का नाम ही विकास है।" यह विकासात्मक परिवर्तन प्रगतिशील, क्रमबद्ध और सुसम्बद्ध होते हैं। जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं में विकास के कारण अभिवृद्धि, उन्नति और प्रगति आती है। ये परिवर्तन रचनात्मक होते हैं। इनके कारण आकार, भार, शरीर के अनुपातों आदि में वृद्धि आती है। जबकि जीवन की अंतिम अवस्थाओं अथवा वृद्धावस्था में विकास के कारण जो परिवर्तन आते हैं वे व्यक्ति को पतन, ह्रास, क्षीणता आदि की ओर बढ़ते जाते हैं। शारीरिक ह्रास के साथ-साथ मानसिक क्षमताओं के ह्रास के लक्षण भी दिखाई देने लगते हैं। यह परिवर्तन उसे वृद्धावस्था की ओर अग्रसर करते हैं। ~~अतः~~ इस प्रकार विकास एक व्यापक सम्प्रत्यय है।

विकास के अन्तर्गत आए परिवर्तनों में एक विशेषता और भी पाई जाती है। यह मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनों प्रकार के होते हैं। (A.B. Hurlock) उदाहरण के लिए बालक के भार तथा मोटाई में परिवर्तन (वृद्धि या कमी) मात्रात्मक कहा जाएगा। जन्म के समय और कई महीनों बाद तक बच्चे बोलने में असमर्थ होते हैं किन्तु दस-बारह महीने की आयु से वे धीरे-धीरे बोलना शुरू करते हैं और आगे यह क्षमता बढ़ती जाती है। यह भी एक प्रकार का परिवर्तन है, जो गुणात्मक कहा जाता है। क्योंकि जन्म के समय यह

अभिक्षमता विद्यमान नहीं होती है।

विकासात्मक मनोविज्ञान केवल इसलिए विकासात्मक नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह प्राणी के भीतर होने वाले विकास का अध्ययन करता है। इसे विकासात्मक इसलिए कहा जाता है क्योंकि विकासात्मक मनोवैज्ञानिक प्राणी की क्षमताओं और व्यवहारों के अध्ययन में अपने दृष्टिकोण को सामान्य न रखकर विकासात्मक रखता है। प्राणी का विकास कई अवस्थाओं से होकर गुजरता है। विकास की प्रत्येक अवस्था में प्राणी की क्षमताओं और व्यवहारों के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जाते हैं। बचपन में बच्चों का सामाजिक संबंध अपने परिवार के सदस्यों तक ही सीमित रहता है। किन्तु बाल्यावस्था में पहुँचने पर वह घर से बाहर के बच्चों के साथ अधिकांश समय बिताने लगता है और उसके group में प्रायः उसी के हमउम्र (Sex) के बच्चे पाये जाते हैं। किशोरावस्था में पहुँचकर वही बच्चे विपरीत sex के सदस्यों में अधिक रुचि लेने लगते हैं। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि किसी भी अवस्था में उत्पन्न behaviour pattern (व्यवहार-संघात) को उस अवस्था के लिए स्वाभाविक समझा जाता है। चाहे वह अन्य दृष्टिकोण से अनैतिक और अविवेक पूर्ण क्यों न दिखाई दें।

मानव शिशु के सम्पूर्ण विकास पर दो महत्वपूर्ण कारकों का प्रभाव पड़ता है जिन्हें genetic and environmental (पर्यावरणीय) कारक कहा जाता है। विकास क्रम में होने वाले परिवर्तनों के पूरी जानकारी और वर्णन के लिए जननिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन भी विकासात्मक मनोविज्ञान में आवश्यक रूप से किया जाता है। इस प्रकार मानव विकास का मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का एक प्रधान अंग कहा जाता है।

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए अब विकासात्मक मनोविज्ञान के स्वरूप को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — "विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह एक ऐसी शाखा है जो मानव तथा अन्य प्राणियों में जीवन के प्रारंभ एवं अंत के मध्य शारीरिक संरचना व्यवहार तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं

के विकास का अध्ययन करता है।

Aims of Developmental Psychology

प्रत्येक विज्ञान के अपने-अपने उद्देश्य होते हैं। जिनको सामने रखकर वह अपनी विषय सामग्री का अध्ययन करता है। विकासात्मक मनोविज्ञान के भी अपने कुछ उद्देश्य हैं जिनकी पूर्ति के लिए वह अपनी विषय सामग्री अर्थात "मानव व्यवहार" का अध्ययन करता है। विकासात्मक मनोविज्ञान के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं जिनका वर्णन इस प्रकार है—

(1) Prediction (भविष्यवाणी)

विकासात्मक मनोविज्ञान का यह प्रथम उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व के बारे में भविष्यवाणी करना है। बच्चा आगे चलकर क्या होगा, कैसा होगा आदि की यह भविष्यवाणी करता है। इसके अतिरिक्त, बच्चों का सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, नैतिक विकास इत्यादि के बारे में भी यह बताता है कि बच्चों में कहाँ तक इनका विकास होगा। बच्चा भविष्य में कलाकार होगा या वैज्ञानिक, समाज सुधारक होगा या बाल-अपराधी इत्यादि के संबंध में भी यह भविष्यवाणी करता है। किन्तु अब प्रश्न यह उठता है कि विकासात्मक मनोविज्ञान किस आधार पर, एवं किस विधि द्वारा बच्चों के बारे में भविष्यवाणी करता है। इस प्रश्न का उत्तर देते यह कहा जा सकता है कि बच्चों के व्यवहार के संबंध में भविष्यवाणी करने के आधार पर उनके past history, माता-पिता के व्यवहार, स्कूली जीवन, वर्तमान स्थिति इत्यादि है। present situation (वर्तमान स्थिति) के आधार पर बच्चों की भविष्यवाणी अधिक की जाती है। किसी परिस्थिति में किसी विशेष उम्र के बालक का किस प्रकार से शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास होगा। यदि किसी बच्चे को यदि विशेष प्रकार की सुविधा तथा परिस्थितियाँ मिलती रहे तो उसके डॉक्टर, बड़े अधिकारी, वकील, इंजीनियर तथा बड़ा ~~[illegible]~~ व्यापारी, वैज्ञानिक बनने की संभावना

रहती है। बाल-विकास एवं व्यवहार के संबंध में इस प्रकार की भविष्यवाणी वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित होती है। अध्ययन जितना ही वैज्ञानिक होगा, उतनी ही अधिक भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती है।

(2) Guidance (मार्गोपदेशन)

विकासात्मक मनोविज्ञान का दूसरा उद्देश्य - बालक के माता-पिता तथा अभिभावकों को समय-समय पर बालक के व्यवहार को उचित दिशा निर्देशन प्रदान करने के लिए मार्गोपदेशन देना चाहिए। इसके लिए विकासात्मक मनोवैज्ञानिक बाल विकास तथा व्यवहार के संबंध में की गयी भविष्यवाणी का सहारा लेता है। इसमें निर्देशन के द्वारा पूर्वकथन को सार्थक बनाया जाता है। Guidance में विकासात्मक मनोविज्ञान बालक की क्षमताओं, बुद्धि, रुचि एवं अभिवृत्ति आदि का अध्ययन करता है। जिसके आधार पर निर्देशनकर्ता माता-पिता एवं अभिभावकों को यह बताता है कि वे अपने बालकों के प्रति कौन सा गुणों का विकास करने के लिए उनके प्रति किस प्रकार का व्यवहार करें और उन्हें उसी प्रकार की परिस्थितियाँ प्रदान करें। आजकल पाश्चात्य देशों के समान ही हमारे देश में कई स्थानों पर बाल निर्देशन केन्द्रों व उपचार गृहों की स्थापना की गयी है, जो बालक एवं उनके माता-पिता तथा उनके अभिभावकों को उचित सलाह देते हैं।

(3) control (नियंत्रण)

विकासात्मक मनोविज्ञान का उद्देश्य न केवल बाल विकास तथा व्यवहार के संबंध में भविष्यवाणी एवं मार्गोपदेशन करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों के व्यवहार का नियंत्रण करना भी है। ऐसा करने से एक तो बालकों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का उचित दिशा की ओर विकास होगा और दूसरी तरफ उनमें बुरी आदतों का विकास भी नहीं होगा। इसलिए विकासात्मक मनोविज्ञान उन परिस्थितियों का नियंत्रण तथा निराकरण करने का प्रयास करता है जो बालकों के व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव डालती है। इस कार्य में विकासात्मक मनोवैज्ञानिक बालक के माता-पिता, अभिभावक

मित्र, पड़ोसी, शिक्षक आदि से सहायता लेता है।

इस संबंध में ध्यान देने योग्य बात यह है कि बाल मनोविज्ञान के इन तीनों उद्देश्यों — भविष्यवाणी, मार्गोपदेशन, एवं नियंत्रण के अभाव में कभी भी सही एवं विश्वसनीय (valid and reliable) नहीं हो सकती, अतः बच्चों के संबंध में सही भविष्यवाणी के लिए उचित मार्गोपदेशन एवं नियंत्रण होना जरूरी है।